श्री संभवनाथ पूजा विधान (लघु)

माण्डला

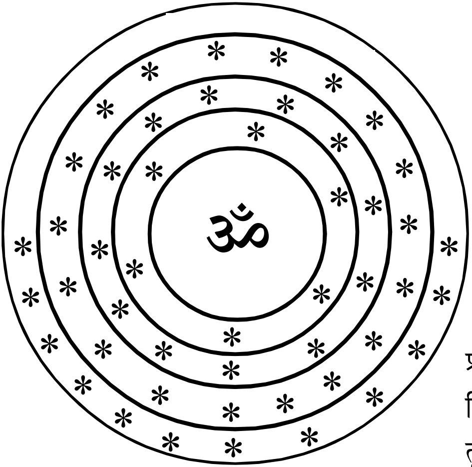

ॐ

प्रथम वलयः– 6

द्वितीय वलयः–12

तृतिय वलयः– 18

चतुर्थ वलयः- 24

कुल = 60 अर्घ्य

रचयिता

प० पू० आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज

कृति	:	**श्री सम्भवनाथ विधान**
कृतिकार	:	प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	द्वितीय, 2026
प्रतियाँ	:	1000
संकलन	:	स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी, मुनिश्री विपिनसागरजी
सहयोगी	:	आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425 ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017 2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879 3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308 4. जय अरिहंत टेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971 5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

पुण्यार्जक परिवार - श्रीमती कमलवती धर्मपत्नी स्व. श्री प्रकाशचंद्र जी जैन
मुकेश कुमार, संजय कुमार, नायक परिवार, श्योपुर (म.प्र.)
इंजी. रजत जैन, श्रीमती रौनक जैन, श्रीमती ममता जैन, श्रीमती रितु जैन
इंजी. नीतेश, डॉ. चिराग, कशिश, कृतिका, जानवी, जियांश जैन
मो.: 9826420365, 9425196822

कृति	:	**श्री सम्भवनाथ विधान**
कृतिकार	:	प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	द्वितीय, 2026
प्रतियाँ	:	1000
संकलन	:	स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी, मुनिश्री विपिनसागरजी
सहयोगी	:	आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425 ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017 2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879 3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308 4. जय अरिहंत टेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971 5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

- पुण्यार्जक परिवार -
श्रीमती अंजना प्रदीप जैन
एल्डको एलिगेन्स, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (उ.प्र.)
मो.: 9839708492

लघु विनय पाठ-1

(दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ ॥1॥
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान ।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान ।॥2॥
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार ।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार ॥3॥
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र ।
चरण कमल में आपके, झुकते विनतं शतेन्द्र ।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार ।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार ॥5॥
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश ।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश ॥6॥
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग ।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विरांग ।।॥7॥
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार ।
अतः भक्त बन के प्रभो! आया तुमरे द्वार॥8॥

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत ।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत ॥1॥
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार ॥10॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं ॥

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु ।
णमोअरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं ।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये ।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए ।।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए ।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।
ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।
ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान ।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान ।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त ! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन ।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिक्षिपामि।

स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश ।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय ।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान ।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण ।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज ।।3।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सारी जिन्दगी रिश्ता निभाया हमने ।
यूँ ही समय बीत गया कुछ न पाया हमने ॥
लोग कहते हैं आप सबका भला करते हो ।
औरों का भला करने में धोखा खाया हमने ॥

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापन (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध ।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध ॥
सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार ।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत बार॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री..... सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्वाण क्षेत्र गणधरादि मुनि समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीतिस्वाहा ।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नोंमय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥6॥

ॐ ह्रीं अहँ मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥7॥

ॐ ह्रीं अहँ मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीतिस्वाहा ।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांती धार ।
हमको भी निज सम करो, कर दो यह उपकार ॥

(शांतये शांतिधारा)

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल ।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल ॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा - जैन धर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल ।
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल ।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन ।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन ।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश ।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष ।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान ।
भावन व्यन्तर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान ।।3।।
मध्य लोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध हैं इष्वाकार ।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु, नन्दीश्वर हैं मंगलकार ।।4।।
रुचक कुण्डल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण ।
सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान ।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष ।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश ।।6।।

दोहा- सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व ।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहें हैं सर्व ।।

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक 1008 श्री......सहित वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर, नवदेवता, मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धित कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, दशलक्षण, सोलहकारण, रत्नत्रयादि धर्म, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान ।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण ।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिंक्षिपेत्)

"गुरु भक्ति - स्तवन"

तर्ज - चांदी जैसा रूप ......

महावीर जैसा रूप है जिनका, ध्याते आतम राम ।
मोक्ष मार्ग के राही के पद, बारम्बार प्रणाम ॥टेक॥
जिनको यह दुनियाँ ना भाई, भाई मुक्ती नार ।
रचने चले स्वयंवर उससे, मोक्ष महल के द्वार ॥
दूल्हा बने दिगम्बर होके, सम्यक्त्वी अनगार ।
हम भी राही बनें मोक्ष के, पाएँ हम शिवधाम ॥
महावीर जैसा रूप ...॥1॥

पाए जो आशीष आप से, चले मोक्ष की ओर ।
हृदय हमारे वास करो गुरु, पावन चंद चकोर ॥
तारण तरण जहाज गुरुजी, थामो मेरा हाथ ।
चरण शरण दो गुरुवर हमको, पाएँ आपका साथ ॥
महावीर जैसा रूप ...॥2॥

चरण शरण में खड़े हैं गुरुवर, ठुकराना न नाथा ।
हम हैं भूले भटके राही, रखना अपने साथ ॥
मरण समाधी हो गुरु चरणों, झुका रहे पद माथ ।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, हे गुरु! दीनानाथ ॥
महावीर जैसा रूप ...॥3॥

तीर्थंकर के राजदुलारे, जिनवाणी के लाल ।
यह संसार असार जानकर, तजा जगत जंजाल ॥
जग को जग की निधियाँ दे दी, पाने को शिवधाम ।
"विशद" भाव से गुरु चरणों में, बारम्बार प्रणाम ॥
महावीर जैसा रूप ...॥4॥

श्री संभवनाथ पूजा विधान (लघु)

स्थापना

दोहा–पावन व्रत धारी हुए, संभवजिन भगवान।
जिनकी अर्चा को यहाँ, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री संभव नाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-ठ:ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहतौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

हम सुधा कलश भर लाए, शिव साधन पाने आए।
श्री संभव जिन को ध्याएँ, हम मोक्ष मार्ग अपनाएँ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि० स्वाहा।

यह चंदन चाँद प्रकारी, है वीतराग अविकारी।
श्री संभव जिन को ध्याएँ, हम मोक्ष मार्ग अपनाएँ।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा।

अक्षत अक्षय उन्हारी, पद दायक है शिवकारी।
श्री संभव जिन को ध्याएँ, हम मोक्ष मार्ग अपनाएँ।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् नि० स्वाहा।

ये पुष्प हैं परमोपकारी, जो अन्तस् काम निवारी।
श्री संभव जिन को ध्याएँ, हम मोक्ष मार्ग अपनाएँ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि० स्वाहा।

चरु चरम लक्ष्य दातारी, है स्व-पर क्षुधा निवारी।
श्री संभव जिन को ध्याएँ, हम मोक्ष मार्ग अपनाएँ।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा।

है दीपक तिमिर विनाशी, जो मोह महातम नाशी।
श्री संभव जिन को ध्याएँ, हम मोक्ष मार्ग अपनाएँ।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि० स्वाहा।

यह धूप स्वरूप प्रदायी, चित् का उपकारक भाई।
श्री संभव जिन को ध्याएँ, हम मोक्ष मार्ग अपनाएँ।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि० स्वाहा।

फल यह मुक्ती फल कारी, जो चेतन का उपकारी।
श्री संभव जिन को ध्याएँ, हम मोक्ष मार्ग अपनाएँ।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेन्द्राय मोक्षा फल प्राप्ताय फलं नि० स्वाहा।

यह अर्घ्य अनर्घ्य प्रदायी, अतिशय अनर्घ्य शिवदायी।
श्री संभव जिन को ध्याएँ, हम मोक्ष मार्ग अपनाएँ।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

दोहा–शांती धारा दे रहे, नाथ! आपके द्वार।
यही भावना है विशद, मिटे भ्रमण संसार।।

शांतये शांति धारा

दोहा–पुष्पांजलि करते चरण, भक्ति भाव के साथ।
मुक्ती पाएँ शीघ्र ही, हे त्रिभुवन! के नाथ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत...

''पंचकल्याणक के अर्घ्य''

चौपाई

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी जान, पाए जिनवर गर्भ कल्याण।
श्री सम्भव जिनवर तीर्थेश, के पद पूजें यहाँ विशेष।।१।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन शुक्ल अष्टम्यां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा मान, पाए प्रभू जन्म कल्याण।
श्री सम्भव जिनवर तीर्थेश, के पद पूजें यहाँ विशेष।।२।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल पूर्णिमायां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अश्विन शुक्ल पूर्णिमा पाय, संयम धारे श्री जिनाय।
श्री सम्भव जिनवर तीर्थेश, के पद पूजें यहाँ विशेष।।३।।

ॐ ह्रीं आसौज शुक्लपूर्णिमायां तपोकल्याणक प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल चौथ भगवान, प्रगटाए शुभ केवल ज्ञान।
श्री सम्भव जिनवर तीर्थेश, के पद पूजें यहाँ विशेष।।४।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल चतुर्थ्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

चैत शुक्ल षष्ठी जिनराज, पाए शिवपुर का स्वराज।
श्री सम्भव जिनवर तीर्थेश, के पद पूजें यहाँ विशेष।।५।।

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ल षष्ठ्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

''जयमाला''

दोहा–तीन लोक के नाथ हे, भव्यों के प्रतिपाल!।
सम्भवनाथ जिनेन्द्र की, गाते हैं जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

श्रावस्ती उत्तर प्रदेश में, भूप जितारी हुए महान।
रही सुसीमा जिनकी रानी, पुत्र हुए सम्भव जिन नाम।।
स्वर्ग से चयकर गर्भागम को, पाए सम्भवनाथ जिनेश।
फाल्गुन शुक्ल अष्टमी पावन, कल्याणक दिन बना विशेष।।१।।
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा तिथि को, जन्मे जिन सम्भव तीर्थेश।
शत् इन्द्रों ने मेरू गिरि पर, किया न्हवन जाके सु विशेष।।
साठ लाख पूरव की आयू, धनुष चार सौ उच्च महान।
तप्त स्वर्णवत् रंग देह का, आप अश्व शुभ लक्षणवान।।२।।
जन्म से तीन ज्ञान के धारी, हुए लोक में मंगलकार।
न्याय नीति से राज्य चलाए, पावन सुखकर भली प्रकार।।
अश्विन सुदी पूर्णिमा के दिन, महाव्रतों को धारे आप।
पाकर के निर्ग्रन्थ अवस्था, त्यागे सब मन के संताप।।३।।
कार्तिक सुदी चौथ को प्रभु जी, प्रगटाए शुभ केवल ज्ञान।
समवशरण आ देव रचाए, किए भाव से मंगलगान।।
गणधर एक सौ पाँच बताए, चारुषेण जी प्रथम गणेश।
सप्त ऋषी से शोभा पाए, समवशरण प्रभु का अवशेष।।४।।

धवल कूट सम्मेद शिखर पर, चैत्र शुक्ल षष्ठी को जान।
कर्म नाशकर शिवपद पाए, सिद्ध हुए सम्भव भगवान।।
जिनकी अर्चा करने वाले, पावें अतिशय पुण्य निधान।
भ्रमण नाश करके भव-भव का, पावें प्राणी शिव सोपान।।५।।

दोहा–भक्ती का दरिया बहे, प्रभू आपके द्वार।
अवगाहन जो भी करें, पावें सौख्य-अपार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–सम्भव जिनकी भक्ति से, सम्भव हों सब काम।
'विशद' भाव से जिन चरण, बारम्बार प्रणाम।।

(इत्याशीर्वाद)

प्रथम वलयः

दोहा–अर्घ्य चढ़ाते हम यहाँ, विनय भाव के साथ।
पुष्पांजलि करते विशद, झुका चरण में माथ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत)

जिनगुणावली

''पञ्चकल्याणक प्राप्त जिन के अर्घ्य''

गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष प्रभु, पंच कल्याणक पाए हैं।
पंचम गति के राही अनुपम, शिवपुर धाम बनाए हैं।।
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, भविजन जिनको ध्याते हैं।
जिनकी अर्चा करने को हम, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्त श्री संभव नाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

''जन्मातिशय''

अतिशय रूप सुगंधित तन शुभ, स्वेत रुधिर मल मूत्र विहीन।
हित मित प्रिय वचन बल अनुपम, प्रभु तन गाया स्वेद से हीन।।
सहस्राष्ट शुभ लक्षण धारी, समचतुष्क पाते संस्थान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, पाने को हम शिव सोपान।।२।।

ॐ ह्रीं जन्मातिशय प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

''ज्ञानातिशय''

सौ योजन में हो सुभिक्षता, हो अदया उपशर्गाभाव।
गगन गमन चारों दिग् दर्शन, कवलाहार का होय अभाव।।

बढ़ते नहीं नख-केश हैं अनिमिष-नयन पूर्ण जो विद्यावान।
छाया रहित प्रभू के पद में, करते हम पावन गुणगान।।३।।
ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय प्राप्त श्री सम्भव जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

''देवातिशय''

अर्ध मागधी भाषा पावन, निर्मल दिश आकाश प्रधान।
सब ऋतु के फल फूल खिलें भू, शोभित होवे काँच समान।।
स्वर्ण कमल की रचना पग तल, गगन में होवे जय जयकार।
मंद सुगंधित पवन वृष्टि हो, गंधोदक की आनन्दकार।।
हो आनन्द सभी जीवों में, धर्मचक्र का अग्र गमन।
मंगल द्रव्य अष्ट हों आगे, कंटक भू के होंय समन।।४।।
ॐ ह्रीं देवकृतातिशय प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

''अनन्त चतुष्टय''

ज्ञानानन्त वीर्य सुख धारी, कहलाते हैं जिन तीर्थेश।
तीन लोक के ज्ञाता अनुपम, अविकारी जो रहे विशेष।।
श्री जिनेन्द्र की महिमा अनुपम, करते हैं सुर नर गुणगान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, पाने को हम शिव सोपान।।५।।
ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

प्रातिहार्य

तरु अशोक सुरवृष्टि सिंहासन, क्षत्रत्रय भामण्डल जान।
चतुषष्ठी महा प्रातिहार्य शुभ, दिव्य ध्वनि है महति महान।।
देव दुन्दुभि वाद्य मनोहर, प्रातिहार्य ये अष्ट विशेष।
केवल ज्ञान प्राप्त होते ही, प्राप्त करें जिनवर तीर्थेश।।६।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य प्राप्त श्री संभव नाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, केवल ज्ञानी जिन तीर्थेश।
दिव्य देशना देने वाले, हित उपदेशी रहे विशेष।।
श्री जिनेन्द्र की महिमा अनुपम, करते हैं सुर नर गुणगान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाते, पाने को हम शिव सोपान।।७।।

ॐ ह्रीं षड्चतुर्विंशति प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा–द्वादश तपधर जो करें, कर्म निर्जरा घोर।
पुष्पांजलि जिन पद करें, होके भाव विभोर।।

।।द्वितिय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(द्वादश तप प्राप्त जिन के अर्घ्य)

(चाल छन्द)

ऋषि 'अनशन तप' के धारी, होते भोजन परिहारी।
प्रभु सम्यक् तप अपनाएँ, जो जगत पूज्यता पाएँ।।१।।

ॐ ह्रीं अनशन तप प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

इच्छा से कम ऋषि खावें, वे ऊनोदरी कहावें।
प्रभु सम्यक् तप अपनाएँ, जो जगत पूज्यता पाएँ।।२।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

व्रत परिसख्यान जो पावें, गणना कर वस्तू खावें।
प्रभु सम्यक् तप अपनाएँ, जो जगत पूज्यता पाएँ।।३।।

ॐ ह्रीं व्रतपरिसंख्यान तप प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि०स्वाहा।

ऋषि गाए 'रस परित्यागी,' सम्यक् तप धर बड़भागी।
प्रभु सम्यक् तप अपनाएँ, जो जगत पूज्यता पाएँ।।४।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

ऋषि 'विविक्त शैय्याशन' धारें, समता के भाव सम्हारें।
प्रभु सम्यक् तप अपनाएँ, जो जगत पूज्यता पाएँ।।५।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैय्याशन तप प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

तप 'काय क्लेश' जो पावें, ना तन में राग लगावें।
प्रभु सम्यक् तप अपनाएँ, जो जगत पूज्यता पाएँ।।६।।

ॐ ह्रीं काय क्लेश तप प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

'प्रायश्चित' तप ऋषिवर पावें, अपने सब दोष नशावें।
प्रभु सम्यक् तप अपनाएँ, जो जगत पूज्यता पाएँ।।७।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

ऋषि 'विनय' सुतप अपनावें, लघुता के भाव जगावें।
प्रभु सम्यक् तप अपनाएँ, जो जगत पूज्यता पाएँ।।८।।

ॐ ह्रीं विनय तप प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

'वैयावृत्ती तप' धारी, ऋषियों के कष्ट निवारी।
प्रभु सम्यक् तप अपनाएँ, जो जगत पूज्यता पाएँ।।९।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ती तप प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

'स्वाध्याय सुतप' जो पावें, निज सम्यक् ज्ञान बढ़ावें।
प्रभु सम्यक् तप अपनाएँ, जो जगत पूज्यता पाएँ।।१०।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि०स्वाहा।

ऋषि काय से राग घटावें 'व्युत्सर्ग सुतप' शुभ पावें।

प्रभु सम्यक् तप अपनाएँ, जो जगत पूज्यता पाएँ।।११।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

निज आतम में रम जावें, ऋषि 'ध्यान सुतप' प्रगटावें।

प्रभु सम्यक् तप अपनाएँ, जो जगत पूज्यता पाएँ।।१२।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

ऋषि 'द्वादश तप' अपनावें, बहु कर्म निर्जरा पावें।

प्रभु सम्यक् तप अपनाएँ, जो जगत पूज्यता पाएँ।।१३।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा–दोष अठारह से रहित, होते हैं भगवान।

अतः भक्त जिनका करें, भाव सहित गुणगान।।

"तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत"

''अष्टादश दोष रहित जिन के अर्घ्य''

।।रेखता छन्द।।

प्रभू जी दोष 'जन्म' को नाश, अजन्मा हुए आप शुभकार।
मोक्ष के राही हुए महान, चरण में वन्दन बारम्बार।।१।।

ॐ ह्रीं जन्म दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

दोष प्रभु करके 'जरा' विनाश, अजर पद पाए अपरम्पार।
मोक्ष के राही हुए महान, चरण में वन्दन बारम्बार।।२।।

ॐ ह्रीं जरा दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

'तृषा' प्रभु कीन्हे दोष विनाश, सुपद पाए हैं विस्मयकार।
मोक्ष के राही हुए महान, चरण में वन्दन बारम्बार।।३।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

''क्षुधा' का रहा न कुछ भी काम, प्रभू यह कीन्हें दोष निवार।
मोक्ष के राही हुए महान, चरण में वन्दन बारम्बार।।४।।

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

नशाए 'विस्मय' दोष जिनेश, किए यह दोष प्रभू परिहार।
मोक्ष के राही हुए महान, चरण में वन्दन बारम्बार।।५।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

प्रभू जी हुए स्वयं में लीन, दोष तब 'मरण' ने मानी हार।

मोक्ष के राही हुए महान, चरण में वन्दन बारम्बार।।६।।

ॐ ह्रीं मरण दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

'अरति' प्रभु करके दोष विनाश, बने निस्पृहवृत्ती अनगार।

मोक्ष के राही हुए महान, चरण में वन्दन बारम्बार।।७।।

ॐ ह्रीं अरतिदोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

दोष प्रभु 'खेद' का किए विनाश, लिया है पावन संयम धार।

मोक्ष के राही हुए महान, चरण में वन्दन बारम्बार।।८।।

ॐ ह्रीं खेद दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

रहा ना जिनको कोई 'रोग', दोष ने स्वयं मान ली हार।

मोक्ष के राही हुए महान, चरण में वन्दन बारम्बार।।९।।

ॐ ह्रीं रोग दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

'शोक' का प्रभु जी किए विनाश, जगाए पावन केवल ज्ञान।

मोक्ष के राही हुए महान, पाए हैं जो शिव का सोपान।।१०।।

ॐ ह्रीं शोक दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

किए जो 'भय' का पूर्ण विनाश, अभय पद पाए महति महान।

मोक्ष के राही हुए महान, पाए हैं जो शिव का सोपान।।११।।

ॐ ह्रीं भय दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं नि० स्वाहा।

किए प्रभु 'मद' का भी परिहार, कहाए विशद आप गुणवान।

मोक्ष के राही हुए महान, पाए हैं जो शिव का सोपान।।१२।।

ॐ ह्रीं मद दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं नि० स्वाहा।

'मोह' को करके अपना शांत, विमोही बने आप भगवान।

मोक्ष के राही हुए महान, पाए हैं जो शिव का सोपान।।१३।।

ॐ ह्रीं मोह दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं नि० स्वाहा।

दोष 'निद्रा' से हुए विहीन, प्रभु जी हुए अनिद्रावान।

मोक्ष के राही हुए महान, पाए हैं जो शिव का सोपान।।१४।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं नि० स्वाहा।

दोष 'चिन्ता' करके परिहार, हुए गुण के जो विशद निधान।

मोक्ष के राही हुए महान, पाए हैं जो शिव का सोपान।।१५।।

ॐ ह्रीं चिंता दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं नि० स्वाहा।

'स्वेद' का हुआ स्वयं ही नाश, किए प्रभु चेतन की पहचान।

मोक्ष के राही हुए महान, पाए हैं जो शिव का सोपान।।१६।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

'राग' का करके प्रभु परिहार, विरागी हुए आप भगवान।

मोक्ष के राही हुए महान, पाए हैं जो शिव का सोपान।।१७।।

ॐ ह्रीं राग दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि० स्वाहा।

'द्वेष' से रहित हुए जिनराज, किए हैं सर्व जगत कल्याण।

मोक्ष के राही हुए महान, पाए हैं जो शिव का सोपान।।१८।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष रहित श्री सम्भवनाथ नाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं स्वाहा।

दोहा–दोष अठारह का किए, प्रभू पूर्ण परिहार।
'विशद' ज्ञान धारी चरण, वन्दन बारम्बार।।१९।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा–गुण विशिष्ट जिनराज हैं, महिमामयी महान।
जिन की अर्चाकर मिले, पावन शिव सोपान।।

(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

विशिष्टगुणाराधना

देव शास्त्र गुरु सप्त तत्त्व में, धारण करके सद् श्रद्धान।
सम्यक् दर्शन शुभाराधना, प्राप्त करें श्री जिन भगवान।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं सम्यकदर्शनाराधना प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

न्यूनाधिक से रहित वस्तु का, यथायोग्य जो करें कथन।
ज्ञानाराधना सम्यक् है यह, पाएँ पूज्य लोक अर्हन्।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञानाराधना प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

पंच महाव्रत समिति गुप्ति त्रय, तेरह विधि चारित्र महान।
चारित्राराधक पाते हैं, पावन परम सुपद निर्वाण।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।३।।

ॐ ह्रीं सम्यक चारित्राराधना प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

कर्मों का क्षय करने हेतू, तप करते साधू गुणवान।
तपाराधना करने वाले, पावें पावन शिव सोपान।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं सम्यक्तपाराधना प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

आप्त कहे सर्वज्ञ जिनेश्वर, विशद ज्ञान ज्योती स्वरूप।
परमेष्ठी सर्वज्ञ हितैषी, निर्विकार है जिनका रूप।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं आप्त सर्वज्ञ स्वरूप श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

राग आग उपशमित किए जो, परम वीतरागी भगवान।
अष्ट कर्म को नाश किए जिन, प्राप्त किए हैं पद निर्वाण।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।६।।

ॐ ह्रीं वीतराग स्वरूप श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

द्वेष रहित समता के धारी रहते हैं जो ध्यानालीन।
लोकालोक प्रकाशी अर्हन्, कहे गये जो ज्ञान प्रवीण।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।७।।

ॐ ह्रीं समता स्वरूप श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

सम्यक् दर्श ज्ञान गुण धारी, रहते हैं जो ध्यानालीन।
जीव तत्त्व मय जो पदार्थ हैं, उनके ज्ञाता परम प्रवीण।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।८।।

ॐ ह्रीं जीवतत्त्व निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

चेतन गुण से रहित कहा जो, वह पदार्थ कहलाए 'अजीव'।
जिसके राग से रागी न हो, कर्म बन्ध न करता जीव।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।९।।

ॐ ह्रीं अजीव तत्त्व निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

काय वचन मन के निमित्त से, चेतन होता आस्रववान।

योग रोध कर निज में रत हो, आस्रव रोकें जिन भगवान।।

तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।

भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।१०।।

ॐ ह्रीं आश्रय तत्त्व निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

क्षीर नीर सम जीव कर्म जब, हो जाते हैं एकामेक।

'कर्म बन्ध' कहलाए बस ये, खोये जिससे जीव विवेक।।

तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।

भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।११।।

ॐ ह्रीं बन्ध तत्त्व निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

सम्यक् चारित्र के द्वारा निज, आगत कर्मों का हो रोध।

तप व्रत शील साधना कर हो, 'संवर' से निज आतम बोध।।

तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।

भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।१२।।

ॐ ह्रीं संवर तत्त्व निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

सम्यक् तप से होय 'निर्जरा', जिससे हो आतम स्वतंत्र।
मोक्ष मार्ग बस यही कहा है, यही मुक्ति का पावन मंत्र।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।१३।।

ॐ ह्रीं निर्जरा तत्त्व निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

जीव कर्म संबंध अनादी, हो जाए जिसका विच्छेद।
यही 'मोक्ष' निर्वाण यही है, जीव और पुद्गल का भेद।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।१४।।

ॐ ह्रीं मोक्ष तत्त्व निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

जीवों का शुभ भाव 'पुण्य' है, इष्ट वस्तु जिससे हो प्राप्त।
उभय लोक यश पाए प्राणी, अन्त समय बन जाये आप्त।।
तीन लोक से जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।१५।।

ॐ ह्रीं पुण्य पदार्थ निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

अशुभ भाव है 'पाप' लोक में, जिससे होवे जन्म मरण।
जो दुखदायी रहे जीव को, तजो धर्म अब करो वरण।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।१६।।

ॐ ह्रीं पाप पदार्थ निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

देव नारकी नर पशु गति में, काल अनादी करे भ्रमण।
इन संसारी जीवों को है, श्री जिनेन्द्र की एक 'शरण'।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।१७।।

ॐ ह्रीं जिन शरण रूप श्री सम्भवनाथ नाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, नित्य निरंजन हैं भगवान।
मुक्त जीव कहलाते हैं जो, करें सभी जिनका गुणगान।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।१८।।

ॐ ह्रीं चैतन्य स्वरूप निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

सूर्योदय होते ही जैसे, चाँद सितारों का अवसान।
'मति ज्ञान' क्षिप जाता क्षण में, प्रगट होय जब केवलज्ञान।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।१९।।

ॐ ह्रीं मतिज्ञान स्वरूप निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

मति ज्ञान से 'श्रुतज्ञान' हो, प्राप्त करें संसारी जीव।
होय प्रगट कैवल्य ज्ञान शुभ, जिसका रहा प्रकाश अतीव।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।२०।।

ॐ ह्रीं श्रुत ज्ञान स्वरूप श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

द्रव्य क्षेत्र की मर्यादा युत, बतलाया है 'अवधिज्ञान'।
रूपी जो पदार्थ को जाने, देश प्रत्यक्ष कहे भगवान।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।२१।।

ॐ ह्रीं अवधि ज्ञान स्वरूप निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

पर के मन की बात जानता, कहलाए 'मनः पर्यय ज्ञान'।
मर्यादा युत द्रव्यादिक की, होता यह भी ज्ञान प्रधान।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।२२।।

ॐ ह्रीं मन: पर्यय ज्ञान स्वरूप निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म नाश हो, प्रगट होय तब केवलज्ञान।
लोकालोक प्रकाशी पावन, पाते हैं जो जिन भगवान।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।२३।।

ॐ ह्रीं केवल ज्ञान स्वरूप निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

'सकल निकल' परमातम द्वय विध, अर्हत् कर्म घातिया हीन।
अष्ट कर्म से रहित सिद्ध हैं, निज स्वभाव में रहते लीन।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।२४।।

ॐ ह्रीं परमात्म स्वरूप निरूपक श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

छियालिस मूलगुणों के धारी, दोष अठारह रहित जिनेश।
जिनके चरणों अर्चा करते, विशद भाव से यहाँ विशेष।।
तीन लोक में जिनकी महिमा, सुर नर मुनिजन गाते हैं।
भक्ति भाव से जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाते हैं।।२५।।

ॐ ह्रीं विशिष्ट गुण प्राप्त श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

जाप्य = ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः

जयमाला

दोहा–महिमा जिनकी है अगम, गुण भी रहे विशाल।
भाव सहित जिनकी यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(त्रोटक छन्द)

जय जय सम्भव जिननाथ परं, भव दाह दवानल मेघ झरं।
जिन मोहादिक सब कर्म हरं, अरि विघ्न विनाशी संत परं।।१।।
गरभादिक मंगलसार धरं, जग जीवन के दुख द्वन्द हरं।
रुज राग द्वेष सब क्षायक हैं, सब तत्त्व प्रकाशक नायक हैं।।२।।
जय केवल ज्ञानानन्त गुणी, तब ध्यावें इन्द्र खगेन्द्र मुनी।
शिव मारग मण्डन तत्त्व कह्यो, गुण सार जगत त्रय तत्त्व लह्यो।।३।।
भव अपने को फल पाय सही, शुभ भाव प्राप्त सब पाप दह्यी।
भव आतप ध्वन्शी इन्दु परं, गुण सार रसायन शर्म भरं।।४।।

प्रभु जन्म जरा मृत दाह हरं, शरणागत पालक नाथ परं।
अतुलं अमलं अकलं अजरं, अकुलं अछलं अरलं अमरं।।५।।
अटलं अथलं असरं अपरं, अनरं अहरं अमरं अशरं।
अकलं सकलं सबलं सरसं, अवयं सवसं अमचं अरसं।।६।।
इन आदि अनेक प्रकार प्रभो!, तुमको निज भजते भक्त विभो!।
हम पे करुणा कर देव परं, प्रभु शरणागत हैं भक्त वरं।।७।।
प्रभु जन्म जरा मृत दाह हरं, शरणागत पालक नाथ परं।
जय जय जय जिनवर देव नुतम, जय 'विशद' ज्ञानधर पद प्रणुतम।।८।।

दोहा—मंगलमय मंगल परम, सम्भव जिन भगवान।
अर्चा करते आपकी, पाने शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

दोहा—तव पूजा का फल मिले, हमको हे भगवान!
जीवन सुखमय शांत हो, अन्त पायें निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः

आचार्य श्री विशदसागर जी का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में धरते हैं।।

ॐ हूँ १०८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

श्री संभवनाथ भगवान की आरती

(तर्ज : आज मंगलवार है...)

संभवनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त की खान हैं।
तीन लोक में मेरे स्वामी, अतिशय हुए महान् हैं।।टेक।।
श्रावस्ती में जन्म लिए प्रभु, अतिशय मंगल छाया है-२
पिता जितारी मात सुसेना, ने सौभाग्य जगाया है-२
संभवनाथ...।।१।।
साठ लाख पूरब की आयु, श्री जिनेन्द्र ने पाई जी-२
धनुष चार सौ मेरे प्रभु की, रही श्रेष्ठ ऊँचाई जी-२
संभवनाथ...।।२।।
तप्त स्वर्ण सम रंग प्रभू का, छियालीस गुण के धारी हैं-२
गंधकुटी में दिव्य कमल पर, जिन रहते अविकारी हैं-२
संभवनाथ...।।३।।
पञ्चकल्याणक पाने वाले, मुक्ती पथ के नेता हैं-२
अनन्त चतुष्टय के धारी प्रभु, अनुपम कर्म विजेता हैं-२
संभवनाथ।।४।।
आरती करने हेतू भगवन्, दीप जलाकर लाए हैं–
सुख-शांती सौभाग्य 'विशद' हो, तव चरणों में आए हैं-२
संभवनाथ...।।५।।

श्री संभवनाथ चालीसा

दोहा- पञ्च परमेष्ठी लोक में अतिशय रहे महान।
सम्भव जिन तीर्थेश का, करते हम गुणगान।।

(चौपाई)

सम्भव जिन शुभ करने वाले, भविजन का दुख हरने वाले।।१।।
मोह विजय तुमने प्रभु कीन्हा, उत्तम संयम मन से लीन्हा।।२।।
श्रावस्ती नगरी है प्यारी, सुखी सभी थी जनता सारी।।३।।
पिता जितारी जी कहलाए, माता आप सुसीमा पाए।।४।।
स्वर्गों से चयकर प्रभु आए, सारे जग के भाग्य जगाये।।५।।
फाल्गुन सुदी अष्टमी जानो, मंगलमय ये तिथि पहचानो।।६।।
सम्भव जिनवर गर्भ में आए, रत्न देव तब कई वर्षाये।।७।।
छह महिने पहले से भाई, हुई रत्नवृष्टी सुखदायी।।८।।
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा गाई, पावन हुई जन्म से भाई।।९।।
इन्द्र कई स्वर्गों से आए, बालक का अभिषेक कराए।।१०।।
पग में अश्व चिह्न शुभ पाया, इन्द्र ने प्रभु पद शीश झुकाया।।११।।
सम्भवनाथ नाम बतलाया, जिन गुण गाकर के हर्षाया।।१२।।
जन्म से तीन ज्ञान प्रभु पाए, अतः त्रिलोकीनाथ कहाए।।१३।।

साठ लाख पूरब की भाई, आयू जिनवर की बतलाई।।१४।।
धनुष चार सौ थी ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का था भाई।।१५।।
अश्विन सुदी पूनम दिन आया, प्रभु ने संयम को अपनाया।।१६।।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, महाव्रती बन के अविकारी।।१७।।
देव कई लौकान्तिक आए, श्रेष्ठ प्रशंसा कर हर्षाए।।१८।।
देवों ने तब हर्ष मनाया, प्रभु के पद में शीश झुकाया।।१९।।
पूजा करके प्रभु गुण गाए, जयकारों से गगन गुँजाए।।२०।।
स्वर्ण पेटिका दिव्य मँगाई, उसमें केश रखे शुभ भाई।।२१।।
देव पेटिका हाथ सम्हाले, क्षीर सिन्धु में जाकर डाले।।२२।।
प्रभु ने अतिशय ध्यान लगाया, निज स्वभाव में निज को पाया।।२३।।
कार्तिक वदी चौथ प्रभु पाए, अनुपम केवलज्ञान जगाए।।२४।।
समवशरण आ देव रचाए, गंधकुटी अतिशय बनवाए।।२५।।
प्रातिहार्य जिसमें प्रगटाए, कमलासन ये जिनवर पाए।।२६।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, गणधर आदि चरण में आए।।२७।।
बारह सभा लगी मनहारी, दिव्य ध्वनि पाई शुभकारी।।२८।।
श्रावक कई चरणों में आए, भिन्न-भिन्न वह पूज रचाए।।२९।।
मनवांछित फल वह सब पाए, अपने जो सौभाग्य जगाए।।३०।।
प्रभु सम्मेदशिखर पर आए, शाश्वत तीर्थराज कहलाए।।३१।।

पूर्व दिशा में दृष्टी कीन्हें, निज स्वभाव में दृष्टी दीन्हें।।३२।।
धवल कूट है मंगलकारी, ध्यान किए जाके त्रिपुरारी।।३३।।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, एक माह निज में चित्त दीन्हें।।३४।।
चैत्र सुदी षष्ठी को स्वामी, बने कर्म नश शिवपथ गामी।।३५।।
एक समय में शिवपद पाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया।।३६।।
हम यह नित्य भावना भाते, प्रभु पद अपने हृदय सजाते।।३७।।
जिस पद को प्रभुजी तुम पाए, वह पद पाने पद में आए।।३८।।
इच्छा पूर्ण करो हे स्वामी!, तव चरणों में विशद नमामि।।३९।।
जागें अब सौभाग्य हमारे, कट जाएँ भव-बन्धन सारे।।४०।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, प्रतिदिन चालिस बार।
पढ़ने से शांती मिले, मन में अपरम्पार।।
स्वजन मित्र मिलकर सभी, करते हैं सहयोग।
इस भव में शांती 'विशद', परभव शिव का योग।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नमः।